

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्री रैनतेयाष्टौत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्री रैनतेयाष्टौत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

श्री रैनतेयः पुण्यात्मा पम्फिराजः शुभकरः।  
शर्माध्यक्षः खगाध्यक्षो ब्रम्हारिद्यारिशारदः ॥ 1 ॥

आहतामरपीयूषः सुबाहूः सामगायनः।  
गणुशैलनिभः शूरः पम्फरिक्फेपघातरान् ॥ 2 ॥

क्ष्माणीधरसमाकारः रैकुठरशरतनः।  
सदा रैकुठचिन्तश्च सर्पघाती महाबलः ॥ 3 ॥

सुरासुरगणेड्यश्च हर्षकोलाहलान्वितः।  
बृहत्पादो महारीरः पम्फिमल्लः शुभान्वितः ॥ 4 ॥

पतङ्गकुलरत्नं च नागेन्द्राभरणः शुचिः।  
सुधाकुम्भधरस्साधुः सुपर्णो रिष्णुराहनः ॥ 5 ॥

अपमृत्युहरो दम्फा बृहत्पम्फः सुबुद्धिमान्।  
कार्कोटहारः सुयशाः पम्फरेगजितानिलः ॥ 6 ॥

नीलाम्बरधरः श्रुती सरेशो भक्तवत्सलः।  
रासुकि ब्रम्हासूत्रश्च तम्फेण कटिसूत्ररान् ॥ 7 ॥

रेद शास्त्ररिचिन्त्यश्च ब्रम्हागुर्यापकः परः।  
दैत्यारिर्ब्रज्जदंष्ट्रश्च सुधाकुम्भः सुहस्तकः ॥ 8 ॥

नागहन्ता साधुसेरी रिश्वरिख्यातकीर्तिमान्।  
काञ्ति सम्पूर्णदेहश्च शुक्लरत्नधरोहमलः ॥ 9 ॥

ত্রিবৃৎসামশিরঙ্কশ্চ সৎরাদিগুণ সংযুতঃ।  
স্বস্তি দক্ষিণপাদশ্চ সুরর্ণসদৃশঃ পটুঃ ॥ 10 ॥

দীর্ঘবাহুরক্তনেত্রঃ রক্ততুণ্ডো মহাবলঃ।  
অণ্ডজেন্দ্রঃ পাপনাশঃ নীলনাসঃ সুদীপ্তিমান্ ॥ 11 ॥

মহাদর্শীকরাহারঃ সুচরিত্রঃ সুখঙ্করঃ।  
রাহনেন্দ্রশ্চোত্তমাঙ্গঃ দ্বন্দ্বযুদ্ধ রিশারদঃ ॥ 12 ॥

সর্দধ্যেযোহর্যাজবন্ধুঃ পদ্মদক্ষিণকর্ণকঃ।  
শাকিনীডাকিনীহস্তা পিঙ্গলাক্ষো ভযঙ্করঃ ॥ 13 ॥

নিত্যতৃপ্তঃ সদাতুষ্টো দৈত্যারাতিরথো দূঢ়ঃ।  
মহাধীরো মহাশূরো নিঃসহায়ো মহাবলী ॥ 14 ॥

মহাপদ্মাখ্যনাগেন্দ্ররাজদ্বামশুভপ্ররাঃ।  
রন্দিতব্রহ্মরুদ্রাদিরিশ্ররন্দ্যো মহামতিঃ ॥ 15 ॥

ফণীন্দ্র কটকস্বামী বিনতানন্দরর্ধনঃ।  
গরুত্মান্ গরুডশ্চণ্ডশ্চাষ্টনাগ রিভূষণঃ ॥ 16 ॥

তটিংকান্তিসমানাভঃ মাতৃশোকরিনাশনঃ।  
কোটিসূর্যপ্রতীকাশঃ কনকাচলসন্নিভঃ ॥ 17 ॥

সর্পভূতগণেড্যশ্চ সর্পাভরণভূষিতঃ।  
সকলক্ষ্মরেলনাশী চ সর্পদোষনিরারকঃ।  
রিষুঃ ভক্তানুকম্পী চ ঋগ্যজুঃসামরিগ্রহঃ ॥ 18 ॥

ইতীদং রৈনতেযস্য নাম্নামষ্টৌত্তরং শতম্।  
ত্রিসন্ধ্যং যঃ পঠেন্নিত্যং স সর্বাভীষ্টমাপ্নুযাৎ ॥ 19 ॥

श्रीमता रैनतेयेन पुनरारर्तिरर्जितम्।  
नीयते च परक्वाम योगिनामपि दुर्लभम् ॥ 20 ॥

॥ इति श्री रैनतेयाष्टौत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥